L. N. MITHILA UNIVERSITY
DARBHANGA (BIHAR)
B.A PART- III
PAPER- VIII
PSYCHOLOGY (HONOURS)
TOPIC- Antecedents of Functionalism.

Dr. Pramod Kumar Sahu.
Assistant Professor.
Guest Teacher.
V.S.J. College Rajnagar,
MADHUBANI (BIHAR)
pramodkumardbg2018@gmail.com

प्रकार्यवाद (Functionalism) मनोविज्ञान के इतिहास में एक प्रमुख सम्प्रदाय है, जिसकी स्थापना संरचनावाद के विरोध में हुआ, (Structuralism) प्रकार्यवाद में चेतन तथा व्यवहार की उपयोगिताओं के अध्ययन पर बल डाला गया है। जब प्रकार्यवाद का प्रभाव अपने चरम सीमा पर था तो संरचनावाद का प्रभाव समाप्त होने लगा था, तो संरचनावाद का प्रभाव समाप्त होने पर भी, प्रकार्यवाद अमेरिकन मनोवैज्ञानिकों का एक काफी लोकप्रिय सम्प्रदाय था, और इसके जन्म के पीछे कई पूर्ववर्ती कारक महत्वपूर्ण माने जाते हैं। जिसके मूल रूप से दो वर्गों में विभाजित करके मनोवैज्ञानिक द्वारा वर्णन किया है।

(1) विकासात्मक सिद्धान्त (Evolutionary Theory)
स्पेंसर (Spencer) डार्विन (Darwin) तथा गाल्टन (Galton) तीनों मुख्य विकासात्मक स्रोत माने गये हैं। जिससे प्रकार्यवाद (Functionalism) के स्कूल की उत्पत्ति काफी प्रभावित हुई। 1885 में स्पेंसर (Spencer) ने अपनी मशहूर पुस्तक (Principles of Psychology) का प्रकाशन किया। स्पेंसर के विचार विकास (evolution) से तात्पर्य अस्पष्ट एकरूपता से स्पष्ट विषमरूपता में परिवर्तन से होता है। जिसमें संगठन तथा विभेदीकरण की सतत प्रक्रिया सम्मिलित होती है। ऐसे परिवर्तनों द्वारा प्राणी अपने बाह्य वातावरण के साथ समायोजन करने की कोशिश करता है। प्रत्येक पशु अपने पर्यावरण में एक स्वाभाविक ढंग से अनुक्रिया करता है। विकासात्मक सीढ़ी में प्राणी जितना ही ऊँचा होता है उसकी अनुक्रियाएँ उतना ही जटिल एवं भिन्न होती है।

सांवेगिक अनुक्रियाएँ उत्पन्न होती हैं। और परिवर्तन के साथ सम्पूर्ण समायोजन की ओर प्रसार करती हैं। इन्हें प्रतिवर्ती की संज्ञा दी जाती है। विकासात्मक श्रेणी के उच्चतर पशु अधिक जटिल प्रतिवर्ती क्रियाएँ करते हैं जिसे मूलप्रवृत्ति कहा जाता है। उच्चतर पशु सामान्यतः अधिक जटिल एवं लचीले व्यवहार करते हैं। जो सरल एवं अभिनिश्चित व्यवहारों से एक समायोजन की प्रक्रिया द्वारा विकसित होते हैं। एक उच्चतर मानसिक कार्य इसी प्रक्रिया के अंग होते हैं। स्पेंसर ने यह मत रखा है कि कोई कार्य जितना ही अधिक आनन्ददायक होता है वह प्राणी के लिए उतना सुखद होता है। कुछ विशेष आनन्ददायक कार्यों की आनुवंशिकता द्वारा प्राणी अपने वंशजों को दे पाता है। स्पेंसर के अनुसार क्योंकि मन का विकास शरीर के विकास के साथ-साथ होता है, अधिक विभेदीकरण से अधिक आनन्ददायक अनुभूतियों की उत्पत्ति होती है, इस तरह से हम पाते हैं कि स्पेंसर के लिए प्रजातियों खासकर पशुओं तथा मनुष्यों के बीच चेतनता का विकास की क्रमिक माना जाता है। सम्पूर्ण में स्पेंसर ने किसी सजीव प्राणी में चेतना के विकास के लिए इसे एक महत्वपूर्ण कारक माना है, तथा निर्जीव वस्तुओं से सजीव वस्तुओं के विकास के लिए मूलतत्व माना है। इस मान्यता द्वारा जैविक समस्याओं का मनोविज्ञान के क्षेत्र में अंतरण (Transfer) होता है, और स्पेंसर का मनोविज्ञान एक तरह से प्रथम विकासवादी मनोविज्ञान की भूमिका में आ जाता है।

चार्ल्स डार्विन (Charles Darwin) अंग्रेज जीव-वैज्ञानिक हैं जिनके विचारों से विकासवाद काफी प्रभावित हुआ है। उनकी एक प्रसिद्ध पुस्तक 1859 में प्रकाशित हुआ और 1872 में इसकी महत्वपूर्ण पुस्तक प्रकाशित हुई। डार्विन ने स्पेंसर के विचारधारा की प्रशंसा की और यह कहा कि अस्तित्व के लिए संघर्ष ही निर्णायक है।

Scanned with CamScanner

उत्तम ढंग से समायोजित प्राणी हैं वे जीवित रहने की सम्भावना अधिक होती है। तथा स्वाभाविक चयन के माध्यम से ऐसे ही प्राणी पुनरुत्पादन करने में भी सक्षम होते हैं। कुछ प्राणी जो अपनी पूर्णक्षमता के साथ समायोजन नहीं कर पाते हैं, वे जीवित नहीं रह पाते हैं और पुनरुत्पादन में भी सक्रियता नहीं दिखला पाते हैं। डार्विन का मत है कि सभी मानसिक क्रियाओं का व्याख्या समायोजित प्रकार्य के रूप में करना चाहिए। डार्विन ने यह भी मत स्पष्ट किया कि समायोजन एवं अनुकूलन की सम्पूर्ण प्रक्रिया का सम्बन्ध मनोवैज्ञानिक एवं दैहिक प्रकार्य से होता है। क्योंकि मन (mind) का विकास शरीर के साथ-साथ ही होता है। डार्विन ने चेतना को जैविक रूप से सामंजस्य प्रकार्य माना है और उन की अभिव्यक्ति से कोई निश्चित उद्देश्य का प्रतीत होती है। ऐसा कहा जाता है कि डार्विन के विकास वा विचारधाराओं से समग्र रूप से पशुओं तथा मनुष्यों के बीच सातत्यता को स्थापित करने में मदद मिलती है। और यह सातत्यता से पशु मनोविज्ञान के कार्यक्षेत्र विकसित हो जाता है। और प्रकार्यवादी मनोविज्ञान को अपने आप बढ़ावा मिलता है।

(सर Francis Galton) के - चचेरे भाई थे, मनुष्यों में आनुवंशिक कारकों का अध्ययन अधिक ही स्वीकृत किया, वैयक्तिक विभिन्नता के अध्ययन पर सर्वाधिक अधिक कार्य किया, उनकी महत्वपूर्ण पुस्तक का प्रकाशन 1869 में किया गया और बुद्धि के क्षेत्र में वैयक्तिक विभिन्नता के अध्ययन को सबसे व्यापक विस्तृत रूप से प्रतिपादित किया गया, वे आनुवंशिकता की समस्याओं का अध्ययन करने के लिए सांख्यिकी विधियों का प्रतिपादन किये। और वैयक्तिक विभिन्नता के अध्ययन से मनोविज्ञान में उपयोगितावादी विचारधारा को बढ़ावा मिला,

Scanned with CamScanner

विशेष मानसिक योग्यताओं के विकास के अध्ययन को प्रोत्साहन मिला, इस तरह से उपयोगितावादी विचारों का प्रकार्यवाद के ऊपर पर गहरा प्रभाव पड़ा।

(ii) विलियम जेम्स का मनोविज्ञान :-

इतिहासकारों ने विलियम जेम्स के प्रकार्यवाद का एक महत्वपूर्ण अग्रदूत माना है। लेकिन लोगों का मत है कि एक सम्प्रदाय के रूप में प्रकार्यवाद की स्थापना अपनी प्रसिद्ध पुस्तक (Principles of Psychology 1890) के दोनों जिल्दों में कर चुके थे। जेम्स का मत था कि व्यक्ति के व्यवहार अनुकूली होते हैं। और मनोवैज्ञानिक रूप से जीवित रहने के लिए प्राणी को अपने पर्यावरण के साथ समायोजन करना आवश्यक है। उनका यही विचार प्रकार्यवाद के लिए एक आधार बन गया, इस तरह से अनुकूलन में मानसिक क्रियाओं तथा शारीरिक क्रियाओं दोनों की भूमिका होती है। इस तरह से जेम्स का मत था कि व्यक्ति के व्यवहार में मन तथा शरीर दोनों ही सम्मिलित होते हैं। जेम्स का यह भी मत था कि चेतन विकास का ही परिणाम होता है। अतः प्रकार्य के समान चेतन का भी एक विशेष प्रकार्य होता है। उपयोगितावाद पर जेम्स के जो विचार थे। प्रकार्यवाद की स्थापना पर उसके भी गहरा प्रभाव पड़े।

Dr. Pramod Kumar Sahu,
Date - 17/08/2020,
Sub - Psychology.

Scanned with CamScanner